

⇒ भू-संचलन एवं भू-आकृतियां  
(Earth Movement & Landforms)

⇒ बाह्यजंत बल  
Exogenetic force



अनाच्छादन (Denudation)

अपघ्नय  
(Weathering)

अपरदन  
(Erosion)

बहता  
जल

हिमनद

पवन

भूमिगत  
जल

स्नाग्शील  
तरंग

⇒ अनावृत्तीकरण / अनाच्छादन (Denudation)



- बाह्य शक्तियों द्वारा धरातल की ऊँचाई और नीचाई समाप्त कर उसे समतल बनाने के प्रयास में लगी समस्त प्रक्रिया को अनावृत्तीकरण कहते हैं।
- अनावृत्तीकरण धीमी गति से सम्पन्न होता है। इसमें अंतर्जति शक्तियां बाधपूर्ण उत्पन्न करती हैं।

• अनावृत्तिकरण के अन्तर्गत तीन क्रियाएं सम्मिलित हैं:-

1 - अपक्षय / क्षुण्ण

2 - अपरदन

3 - शिलारवंदी का सामूहिक रूप से सरकना

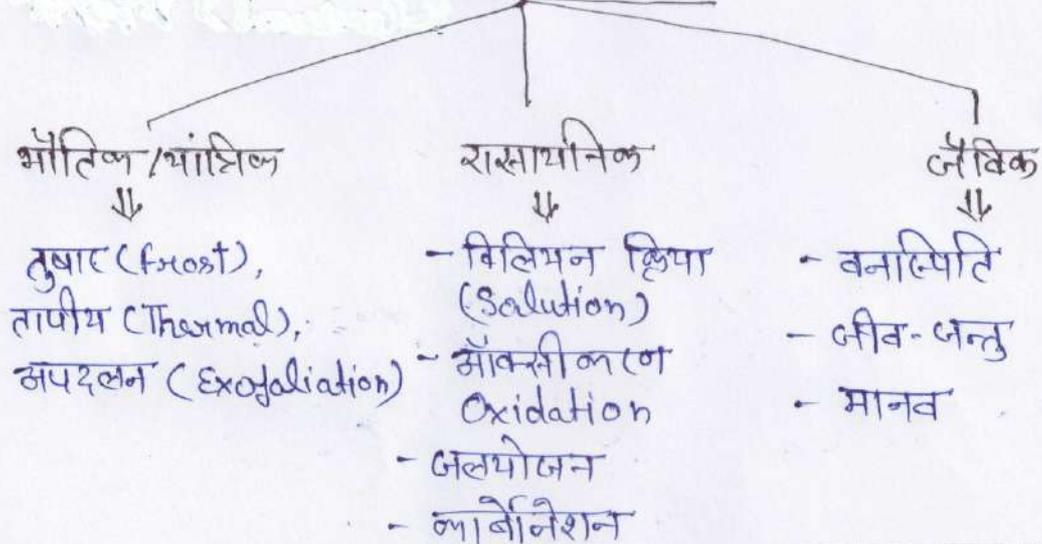
अपक्षय (Weathering) :-

↳ ताप परिवर्तन, पाला, वनाल्पित, जन्तु अथवा मानव द्वारा शैल के खुले भाग के टूटने अथवा क्षय के प्रक्रम को अपक्षय कहते हैं।

↳ इस क्रिया में चट्टानों का विघटन तथा अपघटन की क्रियाएं सम्मिलित हैं।

↳ अपक्षय की क्रिया किसी विशेष रूप की रचना नहीं करती है।

### अपक्षय के प्रकार



### अपरदन (Exosion) :-

- 1- यह वह प्रक्रम है जिसके द्वारा उच्च भूमि की कैंचर्ड में निरन्तर बमी होती है। और अपरदित मलवा अपनी उत्पत्ति के स्थान से किसी अन्य स्थान पर निक्षेपित होने के लिए हटाया जाता है।
- 2- अपरदन में उच्च भू-भाग निम्नभूमि धारण करते हैं।
- 3- अपरदन क्रिया विभिन्न प्रकार के स्थलरूपों की रचना करती है।

⇒ अपक्षय: भौतिक/यांत्रिक

- उष्ण और शुष्क क्षेत्रों में, दैनिक तापान्तर बहुत अधिक होता है + गर्म चट्टानों पर खूबसे वर्षा होना।

↳ खंड विघटन (block disintegration)

↳ कणिकामय विघटन (granular disintegration)

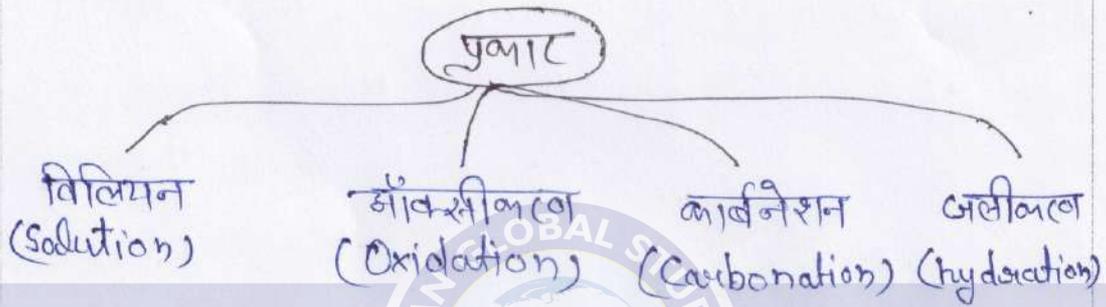
↳ अपक्षय/अपक्षयन/अपक्षयण/परत (तट) उखाड़ना (Exfoliation)

↳ शीत क्षेत्रों में जल या चट्टानों की दरारों/संधियों (cracks/joints) में क्रमिक रूप से जमना और पिघलना (Alternate freezing and thawing) तथा क्रिया (frost-action) कहलाता है।

अपक्षय: रासायनिक (Chemical)



तापमान और आर्द्रता/वर्षा अधिक रहने पर रासायनिक अपक्षय तीव्रता से होता है। प्रकृति में भौतिक और रासायनिक अपक्षय साथ साथ भी चलते हैं।



अपक्षय: जैविक (Biological)



बनस्पति, एवं जीव-जन्तुओं द्वारा चट्टानों को तोड़ा जाना

अपरदन (Erosion)



शिलाखंडों का सामूहिक रूप से सरकना

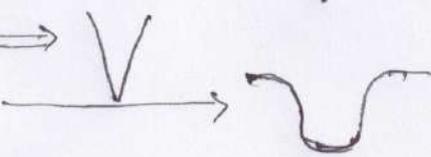
↳ आतन - गुरुत्वाकर्षण बल

## स्थलाकृतियां (Land forms)

⇒ नदी द्वारा निर्मित स्थलाकृतियां :- अपरदन

- V आकार की घाटी ⇒ V

- गार्ज ⇒ V

- लेनिथन → 

- क्षिप्रिका

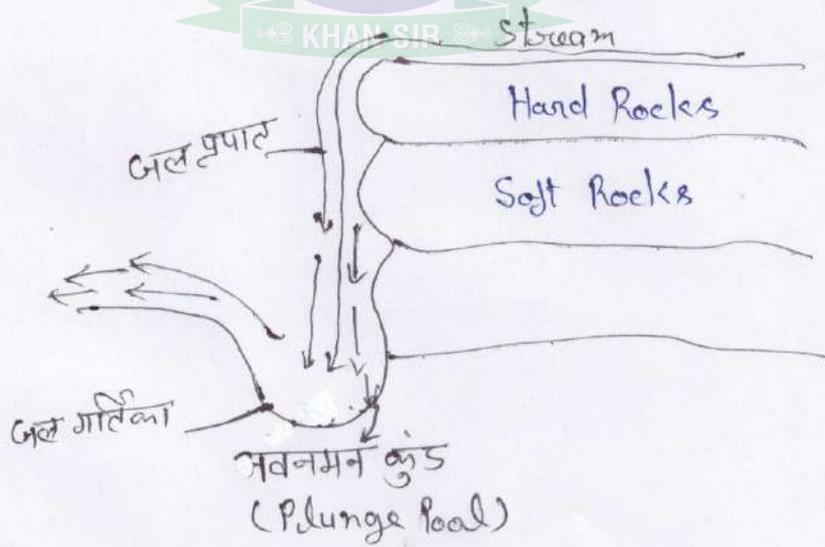
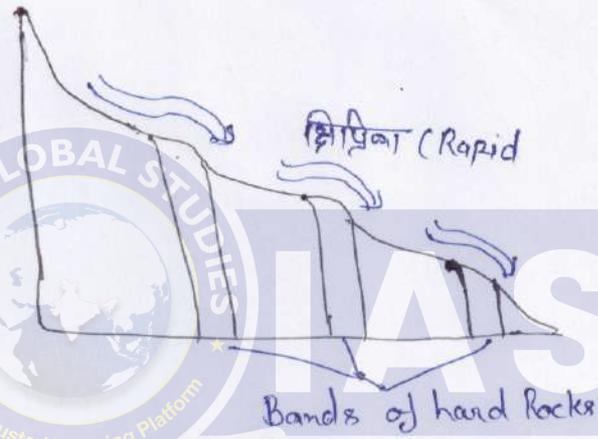
- जलप्रपात

- सवनमन कुंड

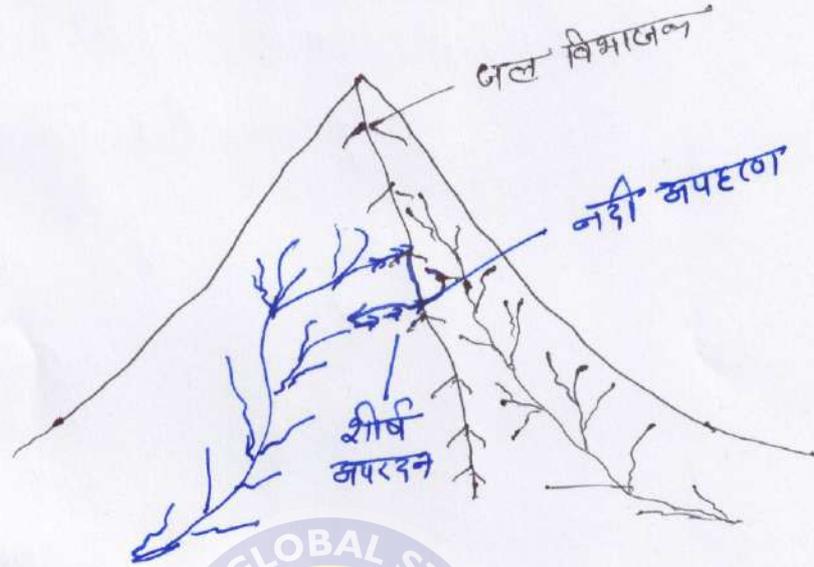
- जल गतिष्का

- विसर्प ⇒ 

- नदी वैदिका



⇒ Headward Erosion  
शीर्ष अपरदन



## निक्षेपण द्वारा निर्मित

- निक्षेपात्मक (Depositional)
- जलोढ़ शंकु (Alluvial Cone)
- जलोढ़ पंख (Alluvial Fan)
- प्राकृतिक बांध (Natural Levees)
- बाढ़ या मैदान (Flood Plain)
- विलम्ब (Meander)
- गोरतुर झील (Ox-bow Lake)
- डेल्टा (Delta)

diagram  
को Booklet  
में देखें

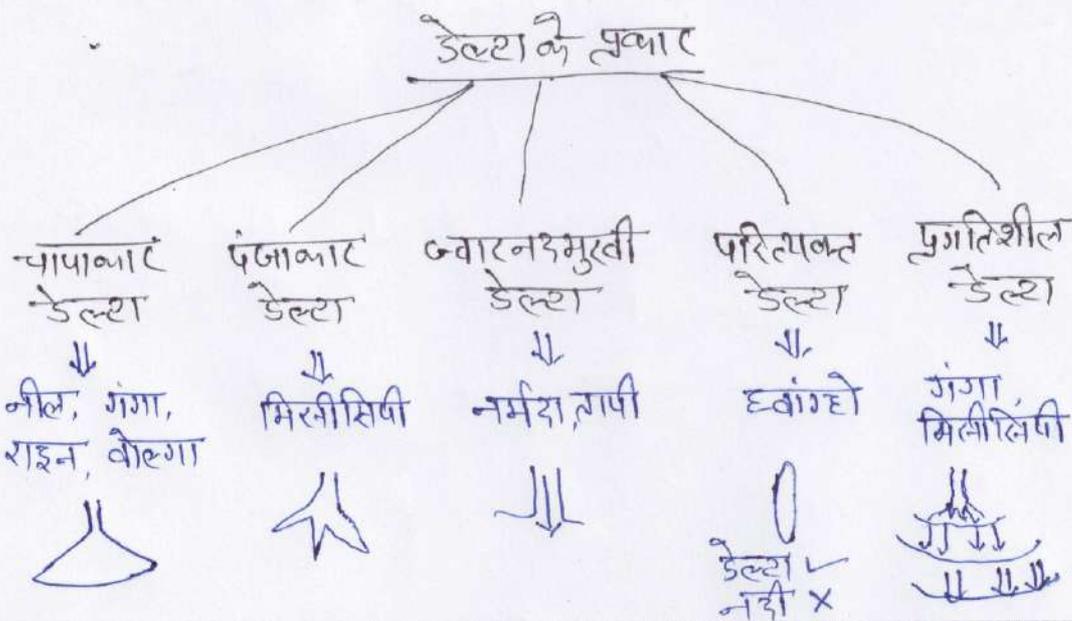
## डेल्टा (Delta)

- जब नदी सागर या झील में गिरती है तो उसके प्रवाह में अवरोध एवं वेग में कमी के कारण नदी के मलबा का निक्षेपण होने लगता है। नदी अपने पूरे जल को खूब ही धारा में बहने में असमर्थ होती है। तथा अपने आपको कई धाराओं में विभाजित कर लेती है।

• इस प्रकार खूब विभुजावात दृश्यलाकृति का निर्माण होता है। जिसे डेल्टा कहते हैं।

• विश्व में गंगा-ब्रह्मपुत्र का डेल्टा सबसे बड़ा है।

• वहाँ पर नदी के मुहाने पर शक्तिशाली लागरीय लहरें, घासरं तथा डबल-भाटे आते हैं। वहाँ पर डेल्टा नहीं बन पाते।



## हिमानी द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ

अपरचनात्मक

- सख (Cisque)
- टार्न (Tarn)
- अरेत (Arête)
- घार्न / गिरिशृंग (Horn)
- दर्रा (Col)
- U आकार की घाटी
- लटकती घाटी (Hanging Valley)
- हिम खोपान
- फियोर्ड (Fjord)

↓  
सरलती हुई अथवा आगे बढ़ती हुई  
हिम राशि को हिमानी या  
हिमनद कहा जाता है।

→ diagram को  
Notes में देखें

निक्षेपात्मक (Depositional)

- हिमौठ (Moraine)
- पार्श्विक
- मध्यस्थ
- तलस्थ
- अंतिम या अंतस्थ
- बिस्थापित खंड
- ड्रमलिन
- बड़े की टोळरी स्थलाकृति
- एरन्कर ← जमाव एक सीधी रेखा में
- क्लेतली
- हिमनद अपक्षेप मैदान

→ diagram  
notes में देखें